iv) राजकुमार कन्दर्पकेतु के मित्र का नाम .... था।
(आनन्द / मकरन्द)

अभ्यास प्रश्न

1) सुबन्धु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।

2) सुबन्धु के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

2.3 बाणभट्ट

प्रिय विद्यार्थियों! अभी तक आपने सुबन्धु के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन किया। अब आप बाण के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

2.3.1 जीवन-वृत्त

काव्य और नाटक के क्षेत्र में जो स्थान तथा कीर्ति कालिदास को प्राप्त है वही गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट को प्राप्त है। बाण ने स्वयं हर्षचरित के आरम्भिक उच्छ्वासों में एवं कादम्बरी के मंगल पद्यों में अपना परिचय दिया है। उन्होंने अपने पूर्वजों का निवास स्थान प्रीतिकूट नामक नगर को बताया है। यह प्रीतिकूट नामक स्थान वर्तमान में बिहार का पश्चिमी भाग जो आज 'पीरू' गाँव के रूप में च्यवनाश्रम देवकुण्ड के निकट (बिहार जिले में औरंगाबाद) है। बाण के पूर्वज वात्स्यायन वंश के थे जिसमें कुबेर नामक व्यक्ति का जन्म हुआ। कुबेर के अच्युत, ईशान, हर, पाशुपत नामक चार पुत्र हुए। पाशुपत के पुत्र अर्थपति हुए। अर्थपति के पुत्रों में (भृगु, हंस, शुचि, कवि, महीदत्त, धर्म, जातवेदस्, चित्रभानु, त्र्यक्ष, अहिदत्त, विश्वरूप) आठवें पुत्र चित्रभानु थे जो बाण के पिता थे। बाण के पुत्र भूषण (उपनाम पुलिन्द) हुए जिन्होंने बाण की अपूर्ण गद्यकृति कादम्बरी को पूर्ण किया।

बाण का समय संस्कृत साहित्य के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण समय था। उस समय विद्वानों तथा कवियों की अच्छी संख्या थी। सूर्यशतक के रचयिता मयूर का भी आविर्भाव इसी समय हुआ था। बाण और मयूर दोनों हर्ष के आश्रयदाता कवि थे। हर्षवर्धन (606 से 648 ई.) के सभा पण्डित होने के कारण बाणभट्ट का समय सातवीं शताब्दी ई0 पूर्वार्द्ध माना जाता है।

बाल्यावस्था में ही इनकी माता राजदेवी का स्वर्गवास हो गया था। चौदह वर्ष की अवस्था में इनके पिता का भी देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण कुछ समय पश्चात् देशाटन के लिए निकल पड़े। अपने साथियों के साथ घुमक्कड़ी जीवन व्यतीत करने लगे जिससे उनका उपहास होने लगा, परन्तु बाण ने इसकी परवाह नहीं की। राजा हर्ष ने इन्हें '**महानयं भुजंग**' कहा। बाण ने उसका समाधान किया कि मेरा बचपन बाल्योचित धृष्टताओं से युक्त था। अब विवाह हो जाने के कारण मैं एक स्वच्छ आचरण वाला गृहस्थ हो गया हूँ।

2.3.2 कर्तृत्व

बाणभट्ट के ग्रन्थों में उनके द्वारा रचित दो ग्रन्थों को प्रमुख माना जाता है – 1. हर्षचरित (आख्यायिका), 2.कादम्बरी (कथा)। चण्डीशतक (दुर्गा की स्तुति का काव्य), मुकुटताडितकम् नाटक को भी कुछ विद्वान् इनकी कृति मानते हैं।

1) **हर्षचरित** – हर्षचरित अपनी महत्ता के कारण विद्वानों में बहुत समादृत है। ऐतिहासिक कथानक पर आश्रित गद्यकाव्यों में यह प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका है, बाण ने

प्रारम्भ में ही कहा है– **करोम्याख्यायिकाम्भौद्यौ जिह्वाप्लवनचापलम्।** यह बाण की प्रथम रचना है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश का परिचय दिया है और अग्रिम 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन किया है। इसमें हर्ष के जन्म से लेकर राज्यश्री से मिलने तक का विवरण है। बाण ने हर्षचरित के आरम्भ के 21 श्लोकों में मंगलाचरण तथा पूर्व कवियों एवं कृतियों की प्रशंसा करके महाराज हर्षवर्धन का जयकार किया है।

2) **कादम्बरी** – यह बाण की दूसरी कृति है जो अत्यधिक लोकप्रिय है। यह काल्पनिक कथा है। दुर्भाग्यवश अपनी इस कृति को बाण स्वयं पूर्ण नहीं कर सके। उनके पुत्र भूषणभट्ट (या पुलिनभट्ट) ने इसे पूरा किया। पुत्र ने पिता की शैली अपनाकर अधूरी कथा का सुन्दर उपसंहार किया। इसका कथानक बृहत्कथा पर आश्रित है जो कथासरित्सागर (59 / 22-178) तथा बृहत्कथामंजरी (16 / 183....)में निर्दिष्ट है।

कादम्बरी में चन्द्रापीड और वैशम्पायन के तीन जन्मों का वर्णन है। कथा के अन्त में प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं से मिल जाते हैं। इनके तीन जन्मों का विवरण इस प्रकार है –

	चन्द्रापीड	**वैशम्पायन**	**पत्रलेखा**	**इन्द्रायुध**	**चाण्डालकन्या**
प्रथमजन्म	चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिंजल	लक्ष्मी
द्वितीयजन्म	चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	....
तृतीयजन्म	शूद्रक	शुक	....	कपिंजल	चाण्डालकन्या

मूलकथा (आमुख) – विदिशा के राजा शूद्रक के दरबार में आकर एक चाण्डालकन्या एक अत्यन्त मेधावी, शास्त्रज्ञ और मनुष्य की वाणी बोलने वाला शुक राजा को समर्पित करती है। शुक आर्या छन्द में राजा की स्तुति करता है जिसे सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो जाते हैं और उसके जन्मादि के बारे में पूछते हैं। शुक अपने जन्म के तुरन्त बाद विन्ध्याटवी में माता की मृत्यु, पिता के द्वारा लालन-पालन, शिकारियों द्वारा पिता का वध एवं जाबालि ऋषि के शिष्य हारीत के द्वारा जाबालि ऋषि के आश्रम में अपने आगमन का वर्णन करता है। इसके बाद जाबालि ऋषि ने शुक के पूर्वजन्म का वर्णन इस प्रकार किया।

पूर्वार्द्ध की कथा – उज्जयिनी के राजा तारापीड और रानी विलासवती को तपस्या से चन्द्रापीड नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा के सुयोग्य मन्त्री शुकनास की पत्नी मनोरमा को भी इसी समय पुत्र हुआ जिसका नाम वैशम्पायन हुआ। दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। दोनों समस्त विद्याओं में निपुण हो गए। युवराज पद पर अभिषेक के समय मन्त्री शुकनास ने चन्द्रापीड को अत्यन्त सारगर्भित उपदेश दिया। चन्द्रापीड को इन्द्रायुध नामक घोड़ा और पत्रलेखा नामक दासी भी मिली। चन्द्रापीड और वैशम्पायन दिग्विजय के लिए निकल पड़े। किन्नरयुगल का पीछा करते हुए इन्द्रायुध पर सवार चन्द्रापीड अच्छोद सरोवर पर पहुँचा। वहाँ एक युवती तपस्विनी महाश्वेता से उसका परिचय हुआ। महाश्वेता ने वर्णन करते हुए बताया कि पुण्डरीक नामक एक ऋषिकुमार से उसका प्रेम हो गया था, परन्तु मिलने से पूर्व ही पुण्डरीक कामपीड़ा से दिवंगत हो गया। तभी से वह इस सरोवर में तपस्विनी का जीवन व्यतीत कर रही थी। महाश्वेता अपनी सखी गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी से मिलाने के लिए चन्द्रापीड को ले जाती है। कादम्बरी ने भी महाश्वेता के विवाह न करने के कारण कौमार्यव्रत धारण किया था। प्रथम मिलन में ही चन्द्रापीड और कादम्बरी परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। इसी समय पिता के बुलाने पर चन्द्रापीड उज्जयिनी लौटता है और सेना सहित वैशम्पायन को बाद में आने के लिए छोड़ देता है।

उत्तरार्द्ध की कथा – बहुत समय तक वैशम्पायन के न लौटने पर चिन्तित चन्द्रापीड उसकी खोज में अच्छोद सरोवर पहुँचता है। वहाँ महाश्वेता ने बताया कि वैशम्पायन मुझ पर आसक्त हो गया था। अतः मैंने उसे शुक होने का शाप दे दिया। अपने मित्र के वियोग से दुःखी चन्द्रापीड के भी प्राण निकल गए। तभी कादम्बरी वहाँ आती है और प्रिय के वियोग में प्राण देना चाहती है। तभी आकाशवाणी उसे रोकती है और आश्वासन देती है कि इस शरीर को जलाना मत इसमें पुनः प्राण आएगा और शीघ्र ही तुम दोनों सखियों का अपने प्रेमी से पुनर्मिलन होगा। (यहाँ जाबालि द्वारा वर्णित कथा समाप्त होती है।)

ऋषि जाबालि से अपने पूर्वजन्म का विवरण सुनते ही शुक में दिव्यवाणी और ज्ञान जागृत हो गया और महाश्वेता की स्मृति सताने लगी। तोते ने राजा शूद्रक से कहा कि मैं महाश्वेता से मिलने के लिए अधीर होकर उड़ा तभी चाण्डालकन्या ने उसे पकड़ लिया और उसके पास ले आई। चाण्डालकन्या ने राजा को बताया कि मैं पुण्डरीक (इस जन्म में वैशम्पायन) की माता हूँ। आप भी पूर्वजन्म में चन्द्रापीड थे। यह सुनते ही राजा शूद्रक को कादम्बरी की याद सताने लगी और वे प्राणहीन हो गए। उधर चन्द्रापीड जीवित हो गए। तोते की कथा समाप्त होने पर शाप का समय समाप्त हो गया था। तोता भी पुण्डरीक हो गया। इस प्रकार चन्द्रापीड-कादम्बरी और पुण्डरीक-महाश्वेता का पुनर्मिलन हो गया और सभी सानन्द रहने लगे।

2.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

बाणभट्ट गद्यकाव्य के मूर्धाभिषिक्त सम्राट हैं। इनकी शैली गद्यकवियों के लिए आदर्श है। इन्होंने गद्य के समस्त गुणों को आत्मसात् करके पांचाली शैली में प्रकट किया है। ये पांचाली शैली के प्रयोग में इतने निपुण हैं कि सभी पाठक इनके प्रति नतमस्तक हो जाते हैं। कलापक्ष, भावपक्ष एवं अर्थगौरव में भी सिद्धहस्त हैं। कादम्बरी के शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास के द्वारा राजकुमार चन्द्रापीड को पांचाली शैली में दिया गया उपदेश तो मानो हृदय को उत्साह से सम्पन्न कर देता है और साथ ही जीवन जीने के लिए एक श्रेष्ठतम मार्गदर्शन करता है। बाणभट्ट ने लक्ष्मी के वर्णन प्रसंग में कहा है –

"लब्धापि दुःखेन पाल्यते। न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। नरूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति।" इस प्रकार बाणभट्ट ने अपने काव्यों में छोटे-छोटे समासों का प्रयोग करके पांचाली शैली के सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं।

चित्रण की सजीवता तथा प्रभावशीलता उत्पन्न करने के लिए बाणभट्ट ने समास बहुल ओजगुण से युक्त शैली का स्थान-स्थान पर अवश्य आश्रय लिया है, परन्तु अन्यत्र छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग कर उन्होंने अपनी शैली को सशक्त तथा प्रभावोत्पादक बनाया है।

बाणभट्ट ने अटवी और सन्ध्या के वर्णन में दीर्घ समासों का प्रयोग किया है वहीं विरह वर्णन के अवसर पर लघुकलेवर प्रासादिक वाक्यों का प्रयोग किया है। बाण की लेखनशैली विषय वर्णन के अनुरूप उचित और सरस है। राजशेखर के मत में बाण की शैली में पांचाली रीति का सुन्दर निदर्शन प्राप्त होता है–

शब्दार्थयोः समो गुम्फः पांचालीरीतिरिष्यते।
शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।

पांचाली शैली का प्राण है– वर्ण्य-विषय के अनुरूप पदों का विन्यास जैसा अर्थ वैसा शब्द। यदि वर्ण्य-विषय घनघोर जंगल है तो कवि की वाणी उत्कृष्ट पदावली से मण्डित है। यदि

वह कामिनी के लावण्यरूप का चित्रण है तो कवि का पदविन्यास नितान्त ललित तथा कमनीय है। शब्द के ऊपर अखण्ड साम्राज्य बाण की विशेषता है।

त्रिलोचन कवि की दृष्टि में बाण की रसभाववती कविता के सामने अन्य कवियों की रचना केवल चपलता मात्र है।

हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
भवेत् कविकुरंगाणां चापलं तत्र कारणम्।।

बाण रस सिद्ध कवि हैं बाण को श्रृंगार रस प्रिय है, परन्तु करुण, शान्त, भयानक आदि का भी वर्णन उन्होंने किया है। उनकी रचना में जहाँ प्रकृति का वर्णन है वहीं मनोभावों, अन्तर्द्वन्द्वों का मार्मिक विवेचन भी किया गया है। बाण ने लम्बे समास, अल्पसमास तथा समास रहित तीनों तरह का वर्णन किया है। भाव और भाषा का सुन्दर समन्वय ही बाण की विशेषता है।

महाकवि बाण के विषय में निम्नलिखित प्रशस्तियाँ प्रसिद्ध हैं –

- वश्यवाणी कविचक्रवर्ती – हर्षवर्धन
- कविताकामिनीकौतुक – जयदेव
- कविताकाननकेशरी – चन्द्रदेव
- महानयं भुजंग– हर्षवर्धन
- वाणीबाणस्य मधुरशीलस्य–धर्मदास
- गद्य कवीनां निकषं वदन्ति– आलोचक
- बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् – समालोचक
- तुरंगबाण – आलोचक
- रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
  सा किं तरुणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।। विदग्धमुखमण्डन धर्मदास।
- बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती। उदयसुन्दरी कथा, सोड्ढल।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही(√) का चिह्न लगाइए –

i) विलासवती तारापीड की पत्नी थी – ( )

ii) चन्द्रापीड का विवाह महाश्वेता के साथ हुआ था – ( )

iii) शूद्रक चन्द्रापीड का अवतार थे – ( )

iv) शुकनास तारापीड के प्रधान आमात्य थे – ( )

v) कादम्बरी में चन्द्रापीड उज्जयिनी के राजा थे – ( )

vi) शूद्रक का वर्णन कादम्बरी में हुआ है – ( )

vii) इन्द्रायुध वैशम्पायन का अवतार था – ( )

viii) कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध घोड़ा था – ( )

ix) कादम्बरी शब्द का अर्थ मदिरा है – ( )